SECONDARY SCHOOL
Down Hill
Malappuram
11121

Code no: 69

परंपरा और आधुनिकता की टकराहट

कल युग माना गया इस २१ वी सती मे राम-रावण युद्ध समान परंपरा और आधुनिकता का लड़ाई चालू है। यह दोनों प्रतिभास हमारे देश मे अपने-अपने स्थान बनाने मे मग्न है। क्या की बात यह है कि कभी-कभी इस टकराहट मे मानवियता का शोषण हो जाता है।

सबसे बड़ा परेशानी तब होता, जब लोग परंपरा को धर्म के सूत्र से बाँध देते है। परंपरा बस धर्म तक सीमित नही है, वो सैकड़ो वर्षो से उत्पन्न हुआ एक आदर्श है। जब हम परंपरा को धर्म और आधुनिकता को धर्म निराकरण समझते तब जातिवाद, जैसा गंभीर समस्या जन्म लेता है।

इनके टकराहट को समझने से पहले यह अवश्यक है कि हम इन दोनों प्रतिभासों को समझे। परंपरा का उत्भव उस दिन हुआ जिस दिन पहला मानव जन्म लिया। हर एक पीढी ने अपने अनुभव और आशय को नई पीढी के मन मे ठोस दिया, बाद मे यह अनुभव और आशय एक पंरपरा बन गया। हम उदाहरण ले सकते है भारत का

भारत तो दिखने में एक छोटा देश है, लेकिन उत्तर से लेकर दक्षिण तक अनेक संस्कृति, रीति, रीवाज़ का भूमि है। भारत के परंपरा को, प्रत्येक पारिवारिक संबंध को विश्व राष्ट्रों श्रद्धा और सम्मान से देखते है। लेकिन आधुनिक भारत में यह पारिवारिक संबंध का दिन-प्रति दिन शोषण हो रहा है। आधुनिक आशय और अंग्रेजों के नकल करके हमने परिवार को कलंक बना दिया। हम आज पति-पत्नी, माँ-बाप, बेटा-बेटी, भाई-बहन आदि संबंधों को पूर्ण तरह से उपेक्षित किया है। आजकल डीवोर्स एक फैशन बन गया है, शादी का धोखा दोड़ना कोई महत्वपूर्ण कार्य समझकर लोग एक के बदले दो या तीन शादी करते है। दुःख के साथ बताना पड़ेगा की परंपरा और आधुनिकता के इस टकर में आधुनिक परिवार का शोषण हुआ है।

पुरातन भारतीय परंपरा नारी को माँ, देवी, शक्ती आदि मानता है। लेकिन आधुनिक भारत में लगता है कि देश की साथ ही लोगों का दिल भी मशीन बन गया है। चाहे सामने खड़े एक छह साल की बच्ची हो या फिर सत्तर साल की दादी, नर उसके साथ अत्याचार ही करेगा। आधुनिकता नारी को कोई इज्जत नही देता। बलात्कार, मार-पिट और आसिड अटाक एक रोज़ का मायना बन गया है।

आसिफा, निर्मला, जिशा, सौम्या जैसी मासूम लड़कियों की मौत आधुनिक सिद्ध पर कलंक है। आधुनिकता तो चाहे जितना भी स्त्री शक्तीकरण का बात करें, वो बस स्त्री निराकरण कर रहा है।

इस युग में परंपरा का निराकरण बस इन चीज़ों में ही नही, बल्कि हमारे भोजन संस्कृति में भी प्रचलित है। आधुनिक भारत निवासी आधुनिक भोजन संस्कृति को अपनाकर चावल के जहाँ नूडिलस, चाय के समय शराब, और रोटी के समय पर पिज़्ज़ा खाता है। इस बदलती भोजन शैली के कारण आज हमारा समाज में तनाव, मधुमेह, रक्त छाप, मोटापा जैसा रोग बढ रहा है। कैनसर, जैसा महा रोगों भी शराब, सिगारट और मादक पदार्थ के इस्तेमाल से बढ़ गया है। इसलिए अच्छा यह होगा की हम अपने परंपरा के अनुसार ही भोजन करें।

आधुनिकता के चाह से मानव में उत्पन्न एक बूरा आदत है "नशा"। असल में नशा मानव कल्याण केलिए अविष्कार किया था- यानि लोगों को बिमारी से बचाने केलिए, आफसोज़ के बाद यह है कि आज उसी नशा हमारा काल बन गया है। युव पीढी को

आधुनिकता के नाम पर विदेशीयों का अनुकरण करते हैं, और एल.एस.डी, मोरफिन, सिगारेट जैसा नशा के इस्तेमाल करते हैं। इसलिए बेहतर यह होगा की हम परंपरा ही अपनाए और नशे का निराकरण करे।

अब चर्चा यह करेंगे कि, जब परंपरा धर्म का रूप लेता है, तो क्या होता है। तब होता है असली टकर! कुछ लोगों का यह मानना है कि आधुनिकता धर्म और मूल्य पर दोषी है, लेकिन इस बात पूरी तरह से सच्च नही है। स्वार्थी राजनितिक नेता ही यह खलत आशय का प्रचारक है। चुनाव के समय मत ज्यादा मिलने केलिए कुछ पार्टीयाँ धर्म का उपयोग करता है। तब वो लोग आधुनिकता को बूरा मानते हैं। ऐसा ही कुछ घटना कुछ दिन पहले केरला मे हुआ था, जब उच्च न्यायलय ने आधुनिकता पर आधारित एक प्रस्तावना निकाला, तब परंपरा के नाम पर, धर्म के नाम पर केरल के लोग आपस मे लड़े। पहले हमें मंदिर का गीत या मसजिद का बांग दूसह नही था, लेकिन आज स्थिति बदल गया है। जिस राज्य महा प्रलय के कारण जुड़ गये थे, उसी राज्य परंपरा और आधुनिकता के टकराहट मे जूदा हो गया।

जो लोग भाई-भाई थे उन्होंने आपस में पत्थर फेंका। प्रगति के लिए आधुनिकता अवश्यक है, लेकिन आज प्रगति पर परंपरा बाँधा डाल रहा है। जैसे कवि कहता है।

"कुछ लोग कह रहे हैं, हिन्दू खतरे में है।
कोई और कह रहा है, मुस्लमान खतरे में है।
धर्म का वो चश्मा उतराकर देखो,
हिन्दुस्थान खतरे में है।"

इसलिए दोस्तों वक्त आ गया है कि, इस परंपरा और आधुनिकता के टकराहट से भारत को बचाए।

अब तक हमने बस इस टकराहट का एक नकारात्मक दृष्टीकोण देखा है। लेकिन इस लड़ाई के कारण बहुत सारी अच्छी बदलाव भी आया है। जैसे कि पहले हमारा समाज में एक नारी का जीवन बस रसोई घर में ही समाप्त होते है, पर आज वह पढाई करती है, डाक्टर, पुलिस, आध्यापिका आदि बनकर हर एक क्षेत्र में अपनी हुनर दिखा रही है। इस टकराहट के वजह से, जो "किन्नरों" को समाज और परिवार में कोई स्थान नही है, वो भी आज स्वाभिमान और सम्मान के साथ जीते है। आज किन्नरों को अपशकुन नही कहते

वो भी नर और नारी के समान हर एक क्षेत्र में अपना पहचान बना रहा है। आधुनिकता के कारण ही हमारे समाज से छुआछूत, सती प्रथा, मुतलाक जैसा सामाजिक बुराई समाप्त हो गई। इसी आधुनिक आशय का बल पर मंदिरों में हरिजनों का प्रवेश संभव हुआ। दहेज प्रथा, देव दासी जैसी अत्याचारों का निराकरण भी इस लड़ाई का जीत है। लेकिन भ्रष्टाचार, जातिवाद, स्वार्थता आदि इसका दूष प्रभाव है।

कुछ ऐसा भी घटनाएं हैं जिसे हमें अच्छा या बुरा नहीं कह सकते हैं, नाहि परंपरा या आधुनिकता का पक्ष ले सकते हैं। ऐसा एक घटना है उच्च न्यायलय द्वारा 'विवाहेतर संबंध' को कानून के दृष्टि अनुवाद देना। परंपरा के अनुसार यह परिवार पर कलंक है, अधुनिकता के अनुसार यह स्वतंत्रता है। इस टकराहट में कौन राम और कौन रावण, यह हम नहीं कह सकते।

वक्त आ गया है कि यह टकराहट को रोकने के बारे में सोचे। एक उपाय यह है कि परंपरा और आधुनिकता का सच्चा अर्थ लोगों को समझाना। शायद जन जागरण से यह युद्ध समाप्त हो सकता है। दूसरा उपाय यह है कि परंपरा को संरक्षण

करके, आधुनिकता का प्रचार करना। लेकिन सबसे अच्छा ~~उपाय~~ उपाय यह है कि परंपरा और आधुनिकता को मिलाना। जैसा हम पानी मे चाय पत्ती मिलाकर, ताज़ा चाय बनाते हैं, उसी प्रकार यह दोनों आशयों को मिलाकर हम 'ताज़ा समाज' बना सकते हैं।

अंत मे, मैं बस यह कथन याद दिलाना चाहती हूँ,

"परंपरा और आधुनिकता का इस टकराहट मे मानवता को मत खो देना;
मानव को मत मारना।"

जय भारत!

---x---